पेपर- 305 – विशिष्ट साहित्यकार – धर्मवीर भारती (पद्य विधा)

पाठ्य पुस्तकः 1. 'अंधायुग' (गीतिनाट्य)

2. 'ठण्डा लोहा' तथा अन्य कविताएँ

प्रस्तुत कर्ता – डॉ.करसन रावत

यूनिट -1 धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व और कृतित्व

1. जीवन-परिचय
2. रचना-परिचय
3. रचनात्मक वैशिष्ट्य

यूनिट -2 'अंधायुग' का मुल्यांकन

1. 'अंधायुग' का कथानक और समस्याएँ
2. गीतिनाट्य के रूप में अंधायुग
3. चरित्र-चित्रण- अश्वत्थामा, युयुत्सु, कृष्ण, गांधारी

<u>यूनिट – 3 'ठण्डा लोहा' की कविताएँ</u>

(क) प्रेम संबंधी कविताएँ –

1. फिरोज़ी होंठ
2. फागुन की शाम
3. ठण्डा लोहा
4. उदास तुम

(ख) चिंतन संबंधी कविताएँ –

1. निराला के प्रति
2. थके हुए कलाकार
3. कविता की मौत

<u>यूनिट – 4 ससंदर्भ व्याख्या</u>

(क) 'अंधायुग' अथवा 'अंधायुग' से संदर्भ

(ख) 'ठण्डालोहा' अथवा 'ठण्डालोहा' से संदर्भ

सूचनाः यूनिट-1,2,3 में से किन्ही दो यूनिट से बड़े प्रश्न और किसी एक यूनिट से टीप्पणी का प्रश्न पूछा जा सकता है ।

धर्मवीर भारती का परिचयः पेपर- 305

- **जन्म**

25 दिसम्बर 1926
इलाहाबाद,
उत्तर प्रदेश

- **मृत्यु**

4 सितम्बर 1997 (उम्र 70)
मुम्बई

लेखक - (निबन्धकार, उपन्यासकार, कवि)

शिक्षा - एम ए हिन्दी, पी-एच डी

प्रमुख लेखन -

1. *गुनाहों का देवता* (1949, उपन्यास)
2. *सूरज का सातवाँ घोड़ा* (1952, उपन्यास)
3. *अन्धा युग* (1953, नाटक)

प्रमुख पुरस्कारः

1972: पद्मश्री

1984: वैली टर्मेरिक द्वारा सर्वश्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार

1988: महाराजा मेवाड़ फाउण्डेशन का सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार

1989: संगीत नाटक अकादमीराजेन्द्र प्रसाद सम्मान

भारत भारती सम्मान

1994: महाराष्ट्र गौरव कौडीय न्यास व्यास सम्मान

1.**धर्मवीर भारती** आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे।

2. वे एक समय की प्रख्यात साप्ताहिक पत्रिका धर्मयुग के प्रधान संपादक भी थे।

3. डॉ धर्मवीर भारती को १९७२ में पद्मश्री से सम्मानित किया गया

4. उनका उपन्यास गुनाहों का देवता सदाबहार रचना मानी जाती है।

5. सूरज का सातवां घोड़ा को कहानी कहने का अनुपम प्रयोग माना जाता है, जिस श्याम बेनेगल ने इसी नाम की फिल्म बनायी।

6. अंधा युग उनका प्रसिद्ध नाटक है।। इब्राहीम अलकाजी, राम गोपाल बजाज, अरविन्द गौड़, रतन थियम, एम के रैना, मोहन महर्षि और कई अन्य भारतीय रंगमंच निर्देशकों ने इसका मंचन किया है।

7. **डॉ. धर्मवीर भारती** प्रयोगवादी और नई कविताओं की संक्रांतिकालीन बेला के साक्षी रहे हैं।

8. तत्कालीन परिस्थितियाँ जहाँ एक ओर युद्ध जनित त्रासदियों की शिकार मानवता है, तो दूसरी ओर अंधकारमय वातावरण में भी जीवन के प्रति उत्कट भाव प्रवणता ।

9. इस संधिकालीन समय में कवि भारती के मन में दुविधा, संशय और भय के साथ-साथ आस्था का स्वर भी अंकुरित होता है।

10. 'ठंडा लोहा', 'अंधायुग', 'कनुप्रिया', 'सात गीत वर्ष' जैसी कृतियाँ डॉ. भारती की एक दशक की ऐसी रचनाएँ हैं, जहाँ वे नवीन भाव और विचार बोध को जन्म तो देते हैं, परंतु संपूर्ण कृतित्व में आस्था और अनास्था का द्वंद्व निरंतर जारी रहता है ।

11. डॉ. भारती की आरंभिक रचनाओं में गहरी भावुकता, स्वप्निल उड़ान, प्रणय भावना के साथ सामाजिक संघर्ष के स्वर मिलते हैं ।

12. इन रचनाओं में किशोरावस्था का प्रणय, रूपासक्ति, आत्मसमर्पण की भावना और अहं का शमन कर जीवन की व्यापक सच्चाई को ग्रहण किया गया है।

13. डॉ. धर्मवीर भारती के शब्द हैं- "किशोरावस्था के प्रणय, रूपासक्ति, और आकुल निराशा से एक आत्मसमर्पणमयी वैष्णव भावना और उसके माध्यम से अपने मन के अहं का शमन कर अपने से बाहर की व्यापक सच्चाई को हृदयंगम करते हुए संकीर्णताओं और कट्टरता से ऊपर एक जनवादी भाव-भूमि की खोज, मेरी इस छंद-यात्रा के यही प्रमुख मोड़ रहे हैं।"

14. वस्तुतः धर्मवारी भारती ने धर्म, दर्शन, समाज की शोषित करने वाली रूढ़ि, मृत परम्परा व सड़े-गले मूल्यों को चुनौती दी है, अशिव को जन्म देने वाली मान्यताओं के प्रति अनास्था बरती है, किंतु मानवतावादी पक्षों को ध्यान में रखकर आस्था व विश्वास को भी उसी निष्ठा से सृजित किया ।

1. निराला के प्रति

वह है कारे कजरारे मेघों का स्वामी
ऐसा हुआ कि
युग की काली चट्टानों पर
पाँव जमा कर
वक्ष तान कर
शीश घुमा कर
उसने देखा
नीचे धरती का ज़र्रा-ज़र्रा प्यासा है,
कई पीढ़ियाँ
बूँद-बूँद को तरस-तरस दम तोड़ चुकी हैं,
जिनकी एक एक हड्डी के पीछे
सौ सौ काले अंधड़
भूखे कुत्तों से आपस में गुथे जा रहे।
प्यासे मर जाने वालों की
लाशों की ढेरी के नीचे कितने अनजाने
अनदेखे
सपने

जो न गीत बन पाये
घुट-घुट कर मिटते जाते हैं।
कोई अनजन्मी दुनिया है
जो इन लाशों की ढेरी को
उलट-पुलट कर
उभर उभर उभर आने को मचल रही है !
वह था कारे कजरारे मेघों का स्वामी
उसके माथे से कानों तक
प्रतिभा के मतवाले बादल लहराते थे
मेघों की वीणा का गायक
धीर गंभीर स्वरों में बोला-
'झूम-झूम मृदु गरज गरज घनघोर
राग अमर अम्बर में भर निज रोर।'
और उसी के होठों से
उड़ चलीं गीत की श्याम घटाएँ
पांखें खोले
जैसे श्यामल हंसों की पातें लहराएँ !

कई युगों के बाद
आज फिर कवि ने मेघों को
अपना संदेश दिया था
लेकिन किसी यक्ष विरही का
यह करुणा-संदेश नहीं था
युग बदला था

और आज नव मेघदूत को
युग-परिवर्तक कवि ने
विप्लव का गुरुतर आदेश दिया था !
बोला वह ...
"ओ विप्लव के बादल
घन-भेरी गर्जन से
सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, नवजीवन को
ऊंचा कर सिर ताक रहे हैं
ऐ विप्लव के बादल फिर-फिर !"
हर जलधारा
कल्याणी गंगा बन जाये
अमृत बन कर प्यासी धरती को जीवन दे
औ' लाशों का ढेर बहा कर
उस अनजन्मी दुनिया को ऊपर ले आये
जो अन्दर ही अन्दर
गहरे अँधियारे से जूझ रही है ।
और उड़ चले वे विप्लव के विषधर बादल
जिनके प्राणों में थी छिपी हुई
अमृत की गंगा ।
बीत गये दिन वर्ष मास .....

बहुत दिनों पर
एक बार फिर
सहसा उस मेघों के स्वामी ने यह देखा ...
वे विप्लव के काले बादल
एक एक कर बिन बरसे ही लौट रहे हैं
जैसे थक कर
सांध्य-विहग घर वापस आयें
वैसे ही वे मेघदूत अब भग्नदूत-से वापस आये !

चट्टानों पर
पाँव जमा कर वक्ष तान कर
उसने पूछा...
'झूम-झूम कर
गरज-गरज कर
बरस चुके तुम ?'
अपराधी मेघों ने नीचे नयन कर लिये
और काँप कर वे यह बोले ...
'विप्लव की प्रलयंकर धारा
कालकूट विष
सहन कर सके जो
धरती पर ऐसा मिला न कोई माथा !

विप्लव के प्राणों में छिपी हुई
अमृत की गंगा को
धारण कर लेने वाली
मिली न कोई ऐसी प्रतिभा
इसीलिए हम नभ के कोने-कोने में
अब तक मँडराए
लेकिन बेबस
फिर बिन बरसे
वापस आये।
ओ हम कारे कजरारे मेघों के स्वामी

तुम्हीं बता दो
कौन बने इस युग का शंकर !
जो कि गरल हँस कर पी जाये
और जटाएँ खोल
अमृत की गंगा को भी धारण कर ले!'

उठा निराला, उन काले मेघों का स्वामी
बोला.... 'कोई बात नहीं है
बड़े बड़ों ने हार दिया है कन्धा यदि तो
मेरे ही इन कन्धों पर होगा
अपने युग का गंगावतरण !
मेरी ही इस प्रतिभा को हँसकर कालकूट भी पीना होगा।'

और नये युग का शिव बन कर
उसने अपना सीना तान जटाएँ खोलीं ।

एक एक कर वे काले ज़हरीले बादल
उतर गये उसके माथे पर
और नयन में छलक उठी अमृत की गंगा ।
और इस तरह पूर्ण हुआ यह नये ढंग का
गंगावतरण ।
और आज वह कजरारे मेघों का स्वामी
जहर संभाले, अमृत छिपाये
इस व्याकुल प्यासी धरती पर
पागल जैसा डोल रहा है,
आने वाले स्वर्णयुगों को
अमृतकणों से सींचेगा वह
हर विद्रोही कदम
नयी दुनिया की पगडंडी पर लिख देगा,
हर अलबेला गीत
मुखर स्वर बन जायेगा
उस भविष्य का
जो कि अँधेरे की परतों में अभी मूक है ।
लेकिन युग ने उसको अभी नहीं समझा है
वह अवधूतों-जैसा फिरता पागल-नंगा
प्राणों में तूफ़ान , पलक में अमृत-गंगा ।

प्रतिभा में

सुकुमार सजल

घनश्याम घटाएँ

जिनके मेघों का गंभीर अर्थमय गर्जन

है कभी फूट पड़ता अस्फुट वाणी में

जिसको समझ नहीं पाते हम

तो कह देते हैं

यह है केवल पागलपन

कहते हैं

चैतन्य महाप्रभु में, सरमद में

ईसा में भी

कुछ ऐसा ही पागलपन था

उलट दिया था

जिसने अपने युग का तख़्ता ।

****

काव्य की प्रस्तुति समाप्त

प्रस्तुत कर्ताः डॉ, करसन रावत